विमर्श के अधुनातन आयाम

संपादक

डॉ. सिराज शेख

उप-संपादक

प्रियंका चौहान

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस

दिल्ली

ISBN : 978-81-904853-0-2

प्रथम संस्करण : 2020

© सुरक्षित

प्रकाशक :

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस
जी-86, गली नंबर 3,
शास्त्री पार्क, दिल्ली-110 053

वितरक :

आर. के. पब्लिकेशन
मरीन लाइंस, मुम्बई-400 002
फोन : 9022 521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com

मूल्य : ₹ 175/-

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह
आवरण : सुनील निंबरे

VIMARSH KE ADHUNATAN AAYAM edited by Siraj Shaikh, Priyanka Chauhan

विश्व के सभी शोषित नारियों,

आक्रोश व्यक्त करते किन्नरों

और

पीड़ित वृद्धों

तथा

उन रचयिताओं को

जिनके साहित्य में इनकी पीड़ा को वाणी मिली

उन्हें

सादर समर्पित....

संपादकीय

साहित्य और समाज का आंतरिक संबंध बहुत गहरा होता है। साहित्य समाज को गढ़ता है। उसमें साहस भरता है। सामाजिक अनंत संभावनाओं को संजोए रखने का महत्वपूर्ण कार्य साहित्य में व्यक्त होता है। साहित्य की अनेकों परिभाषाओं का हमने और हमारे जैसे अनेकों ने खूब अध्ययन किया है। पर क्या वाकई में हम साहित्य को समझने में कारगर सिद्ध हुए हैं, यह प्रश्न निरूत्तर कर देता है। संभावना है कि साहित्य को कई नामी गिरामी विचारकों ने समझा है। इसलिए तो वे आज अनेक ज्वलंत समस्याओं पर विचार-विनिमय करते हैं। इन्हीं विचार विमर्शों से एक आदर्श समाज की परिकल्पना की जा सकती है। मैं, आप सभी पाठकों को सोचने के लिए मजबूर कर रहा हूँ कि थोड़ा सोचिए तो की अगर आज साहित्य ना होता, तो समाज किस दिशा की ओर मुड़ता? खैर, साहित्य ने हमेशा से ही विविध विमर्शों को संजोया है। प्रस्तुत पुस्तक इसी प्रकार के विमर्शों को प्रवाहित करती है। इस पुस्तक में वर्तमान साहित्य में पनपते विमर्शों के अधुनातन आयामों को अधोरेखित किया है। अत: पुस्तक का शीर्षक 'विमर्श के अधुनातन आयाम' अपने समुन्नत रूप को प्रकट करता है।

सामाजिक समस्याओं का अन्वेषण करना साहित्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए और ऐसा साहित्य में होता भी है। वर्तमान काल की साहित्यिक कृतियों पर नजर डालने के पश्चात हम पाते हैं कि विविध प्रकार की समस्याओं का चित्रण साहित्य में होता है। आज कल की प्रमुख समस्या दलितों, स्त्रियों, किन्नरों, वृद्धों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और घुमंतू जनजातियों आदि की हैं। वस्तुत: इन्हीं के इर्द-गिर्द साहित्य के नवीन विमर्श घूमते रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं नवीनतम विमर्शों को केंद्र में रखा गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित लेख विविध विषयों से संबंधित है। इन लेखों को मुख्यत: दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पहले खंड में संकलित लेख संशोधन की दृष्टि से आप्लावित है। इनमें विशिष्ट प्रकार का चिंतन प्रस्तुत हुआ है। इन लेखों में साहित्यिक विधाओं में चित्रित विमर्शों एवं

चिंतनपरक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है। अत: यह शोध परक दृष्टि पर आधारित है तथा दूसरे खंड 2 में संकलित लेख किसी विशेष साहित्यिक कृति में चित्रित विमर्श पर केंद्रित है। या यूं कहें की किताबों की चिंतनपरक समीक्षा है।

इसमें लगभग आठ लेख नारी समस्या, नारी वाद, नारी अस्मिता, नारी संवेदना और नारी की जीजिविषा से संबंधित है। वास्तव में नारी की पीड़ा आज तक सही मायने में दूर नहीं हो सकी है। विमर्शों एवं चर्चाओं का तांता साहित्य में दिखाई देता है परंतु समस्या मिटी नहीं है बल्कि आए दिन अखबारों में देखने को मिलता है कि समस्या बढ़ती जा रही है। इसी समस्या को मिटाने के लिए संवेदनशील समाज की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति एवं नवीनतम समाज निर्मिति का असाधारण प्रयास इन आठ आलेखों में देखा जा सकता है। इन लेखों में वर्तमान की साहित्यिक कृतियों में नारी समस्या का जो चित्रण हुआ है, उन्हें अधोरेखित किया हैं। नारी जीवन के विविध आयामों पर इन आलेखों में विचार प्रस्तुत हुए हैं। ये विचार आज के समय में पनपते समाज को संवेदनशील बनाने की कोशिश करते दिखाई देते हैं। भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में नारी समस्या के साथ-साथ वृद्धों और किन्नरों की समस्या भी आम बात हो गई है।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में संकलित सामग्री मानवीयता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हुई है। निश्चित तौर पर इन आलेखों में प्रस्तुत विचारों से हिंदी के अध्येता, सुधी विद्वतजन, अनुसंधानकर्ता लाभान्वित होंगे। यह पुस्तक एक नूतन दृष्टि लेकर साहित्य जगत में परिचित होगी, इसी आशा के साथ मैं इस पुस्तक के संयोजन के लिए आर. के. पब्लिकेशन के संचालक श्री रामकुमार जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ। इन्हीं के सद्प्रयासों से यह किताब नियत समय में प्रकाशित हो रही है।

– डॉ. सिराज शेख

विविध विमर्श

अगर साहित्य चित्त-वृत्तियों का इतिहास है,
संचित ज्ञानकोष का भंडार है तो,
उसमें निकली शाखा विमर्श की ,
क्रांति की मशाल है ।

उत्तर-आधुनिकता में साहित्य की दिशा विमर्शात्मक रही है। इस युग में साहित्य सौंदर्य-शास्त्रीय न रहकर विमर्श के रूप में परिवर्तित हो गया है। जिसमें समाज के विभिन्न वर्ग के दबे-कुचले, दमितों की अस्मिता का प्रखर रूप प्रदीप्त हुआ है। मुख्यधारा के समाज ने किन्नर, दलित, स्त्री, आदिवासी, अल्पसंख्यकों को हमेशा हाशिए पर रखा है और उनके लिए आज विमर्श साहित्य में आवाज बनकर क्रांति की मशाल जलायी हुई है। इतिहास के पन्नों में द्रौपदी, एकलव्य, शंबूक, कर्ण, हिडिम्बा के साथ जो अन्याय किया गया है, आज वर्तमान में साहित्य, विमर्श साहित्य के रूप में उनसे प्रश्न पूछ रहा है, जो द्रोणाचार्य, कुंती, राम, भीष्म का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। समाज के विकास में हर वर्ग, हर समुदायों ने मिलकर अपने कार्यों द्वारा अपना-अपना योगदान दिया है। अगर विदुर जैसे ज्ञानी, वाल्मीकि, व्यास, बाबा साहेब आंबेडकर, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले आदि ने अपना योगदान न दिया होता तो आज हिंदू समाज अस्तित्वहीन होता। यह पुस्तक इन सभी समस्याओं को केंद्रित करता है, जो इतने आंदोलन होने के बाद भी शोषण, दमन, अस्मिता की ज्वलंत समस्या वहीं की वहीं समुद्ररूप धारण किये प्रश्न बनकर खड़ी है। किन्नर विमर्श, किन्नरों की अस्मिता मे लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर रही है; जहाँ साहित्य में भी इसे हाशिए पर ही रखा गया आज विमर्श धारण कर अपनी अस्मिता पर लगे प्रश्नों का जवाब लोगों से मांग रही है। आज के प्रौद्योगिकी युग में हर इंसान यांत्रिकी बनता जा रहा है, जिसके कारण मनुष्य संवेदनाहीन होते जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप एकल परिवार की स्थिति निर्मित हो रही है। दिव्यांगें के साथ असंवेदनशील व्यवहार हो रहा है। इसी के फलस्वरूप अस्मितामूलक विमर्श दिव्यांगों के साथ हो रहे

अनुचित व्यवहारों पर भी प्रश्न खड़ा किया है। आदिवासी विमर्श भी इस दौर में अपनी अस्मिता के अस्तित्व के लिए सभ्य समाज से लड़ाई लड़ रहा है। अस्मितामूलक विषयों पर आज की पीढ़ी युवा-साहित्यकारों ने संशोधनात्मक कार्य किए हैं। उन्होंने नयी समस्याओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है।

उत्तर-आधुनिकता में विमर्श अतीत का दर्पण दिखाते हुए, वर्तमान समय में व्याप्त असमानता, शोषण, वर्ग-भेद, मानव अस्मिता के खिलाफ आवाज उठा रही है और भविष्य के लिए मानवता, भाईचारे का स्वप्न बुन रही है। इस पुस्तक के सभी युवा तथा वरिष्ठ साहित्यकारों ने आज के ज्वलंत समस्याओं के विविध पहलुओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। यह पुस्तक एक पहल है, जो भविष्य को, समाज को सही दिशा निर्देशन देने का कार्य करेगी।

इस पुस्तक के संयोजन तथा प्रकाशन में सहयोग करने वाले रामकुमार जी को हृदयभाव से धन्यवाद करती हूँ। साथ ही पुस्तक के संपादक डॉ. सिराज शेख के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने साहित्य में योगदान देकर उल्लेखनीय कार्य किया है।

– प्रियंका चौहान

अनुक्रमणिका

खंड 1

- **पुनर्जागरण एवं नवजागरण : साम्य एवं वैशम्य** **11**
  – अनुपम आनन्द
- **नारी का स्वरूप एवं शोषण :**
  नारी के विविध रूपों के संदर्भ में **14**
  – चित्रलेखा
- **आधुनिक हिन्दी कविताओं में चित्रित मूल्यों का पतन** **18**
  – मच्छिंद्र कुंभार
- **सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित**
  एकल परिवार की समस्या **24**
  – आर. गायत्री
- **समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी समाज**
  का यथार्थ स्वरूप **28**
  – रूपाली रमेश रीता प्रजापति
- **सुधा अरोड़ा के कथा–साहित्य में नारी संवेदना** **37**
  – सरिता यादव
- **कात्यायनी की कविता में स्त्री** **43**
  – शिवशंकर यादव
- **समाज, समाजीकरण और बराबरी का**
  सपना बुनता नारीवाद **49**
  – डॉ. स्वाती ठाकुर

खंड 2

■ **'युगांत' उपन्यास में स्त्री अस्मिता की खोज** **55**
('गांधारी' के विशेष संदर्भ में)
– आरती प्रसाद

■ **'नालासोपरा : पोस्ट बॉक्स नं. 203' उपन्यास में भूमंडलीकरण** **59**
– भारती यादव

■ **'चार दरवेश' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श** **67**
– प्रा. महेश चव्हाण

■ **स्त्री जीवन के संघर्ष की कथा : 'अभिशप्त श्यामला'** **72**
– मनोजकुमार शर्मा

■ **वैविध्य, सहजता और दृष्टि-बोध का परिचय : 'शब्दों के परे'** **80**
– डॉ. मोहसिन ख़ान

■ **उषा प्रियम्बदा के 'नदी' उपन्यास का मूल्यांकन** **84**
– डॉ. पूनम पटवा

■ **स्त्री जीवन की दास्तान : 'कहानी कोई सुनाओ मिताशा'** **89**
– डॉ. सिराज शेख

■ **डॉ. नीरजा के 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श** **94**
– सोमनाथ कोळी

■ **'एक भिखारिन की मौत' नाट्य कृति में चित्रित स्त्री विषयक दृष्टिकोण** **100**
– सुहास अंगापुरकर

■ **बेटियों को संस्कारित करती मृदुला सिन्हा** **104**
– डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल